Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
March 2024 5(3), 1463–1466

SOCIAL QUESTIONS OF CASTE AND GENDER IN THE CONTEXT OF LITERATURE

जाति और जेण्डर के सामाजिक प्रश्न साहित्य के सन्दर्भ में

Om Mishra [1]

[1] Dr. Bhimrao Ambedkar College, Faculty of Arts, Hindi/Journalism Department, University of Delhi, Delhi

ABSTRACT

English: In Indian society, caste has been given importance as a component of social structure. Classification of sub-castes under caste is also acceptable here. People living in Indian cities, towns and rural areas are seen following the system based here. Under the caste system, all the functions and rights of a person are determined by caste. Caste researchers have studied all aspects of caste structure, function, historical aspects etc. Dr. Srinivas (1955) believes that "In today's Indian society, castes are not the real unit but castes. Varna and caste are related to each other in the real social situation. Varna is related to social status. Everyone believes that Varna is related to the status of Brahmins and untouchables. All the castes between Brahmins and untouchables claim their social status from the viewpoint of Varna.1
Dr. G.S. Ghurye (1950) has mentioned 6 characteristics of caste system- 1. Segmental division of society, 2. Caste stratification, 3. Restrictions on food and social intercourse, 4. Socio-religious qualifications and privileges of different castes, 5. Absence of restricted choice of professions, 6. Restrictions related to marriage.2

Hindi: भारतीय समाज में जाति को सामाजिक-संरचना के अवयव के रूप में महत्व प्रदान किया गया है। जाति के अन्तर्गत उपजाति का भी वर्गीकरण यहाँ स्वीकार्य है। भारतीय शहर, नगर, ग्रामिण क्षेत्रों में रहने वाले लोग यहाँ आधिरित व्यवस्था का अनुपालन करते दृष्टिगोचर होते है। जाति-व्यवस्था के अन्तर्गत व्यक्ति को सारे कार्य व अधिकार आदि सभी कुछ जाति के द्वारा ही निर्धारित होते है। जाति के अध्ययन कर्ताओं ने जाति की संरचना, प्रकार्य, ऐतिहासिक पहलू आदि सभी पक्षों का अध्ययन किया है। डॉ. श्रीनिवास (1955) का मानना है कि ‘‘आज के भारतीय समाज में वर्ण असली ईकाई न होकर जातियां ही है। वर्ण और जाति वास्तविक सामाजिक स्थिति में एक-दूसरे से संबंधित है। वर्ण का संबंध सामाजिक स्थिति से है। सभी लोग यह मानते है कि वर्ण का संबंध ब्राह्मणों व अछूतों की स्थिति से है। ब्राह्मणों और अछूतों के बीच जितनी भी जातियां है वे वर्ण के दृष्टिकोण से अपने सामाजिक स्तर का दावा करती है।’’1
डॉ जी.एस. घुरिये (1950) ने जाति-व्यवस्था की 6 विशेषताओं का उल्लेख किया है-1. समाज का खण्डात्मक विभाजन, 2. जाति-संस्तरण, 3. भोजन और सामाजिक सहवास पर प्रतिबंध, 4. विभिन्न जातियों की सामाजिक धार्मिक योग्यताएं और विशेषाधिकार, 5. पेशों के प्रतिबंधित चुनाव का अभाव, 6. विवाह संबंधी प्रतिबंध।2

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i3.2024.4761

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

1. प्रस्तावना

भारतीय समाज में जाति को सामाजिक-संरचना के अवयव के रूप में महत्व प्रदान किया गया है। जाति के अन्तर्गत उपजाति का भी वर्गीकरण यहाँ स्वीकार्य है। भारतीय शहर, नगर, ग्रामिण क्षेत्रों में रहने वाले लोग यहाँ आधिरित व्यवस्था का अनुपालन करते दृष्टिगोचर होते है। जाति-व्यवस्था के अन्तर्गत व्यक्ति को सारे कार्य व अधिकार आदि सभी कुछ जाति के द्वारा ही निर्धारित होते है। जाति के अध्ययन कर्ताओं ने जाति की संरचना, प्रकार्य, ऐतिहासिक पहलू आदि सभी पक्षों का अध्ययन किया है। डॉ श्रीनिवास (1955) का मानना है कि ‘‘आज के भारतीय समाज में वर्ण असली ईकाई न होकर जातियां ही है। वर्ण और जाति वास्तविक सामाजिक स्थिति में एक-दूसरे से संबंधित है। वर्ण का संबंध सामाजिक स्थिति से है। सभी लोग यह मानते है कि वर्ण का संबंध ब्राह्मणों व अछूतों की स्थिति से है। ब्राह्मणों और अछूतों के बीच जितनी भी जातियां है वे वर्ण के दृष्टिकोण से अपने सामाजिक स्तर का दावा करती है।’’1

डॉ जी.एस. घुरिये (1950) ने जाति-व्यवस्था की 6 विशेषताओं का उल्लेख किया है-1. समाज का खण्डात्मक विभाजन, 2. जाति-संस्तरण, 3. भोजन और सामाजिक सहवास पर प्रतिबंध, 4. विभिन्न जातियों की सामाजिक धार्मिक योग्यताएं और विशेषाधिकार, 5. पेशों के प्रतिबंधित चुनाव का अभाव, 6. विवाह संबंधी प्रतिबंध।2

एल. डोमाण्ट के अनुसार भारतीय जाति-व्यवस्था का आधार आध्यात्मिक है।3 सी. वाणिज्य ने इसका आधार वषांनुगत को माना है।4 आंद्रे बिताई ने भारतीय समाज को जाति आधारित समाज माना है। उन्होंने इसके प्रारूप भी बताये है।5 प्रो. ई.आर. लिच (1960) ने, बेली (1963) ने जाति को एक संगठित समूह के रूप में माना है। एम.जी. बेली के अनुसार-''जाति सामाजिक स्तरीकरण की एक बंद व्यवस्था है।''6

प्रो. अटल ने जाति को निम्न आधार पर स्पष्ट किया है-''1. अन्त्रविवाही-अपनी ही जाति में विवाह, 2. जन्मगत-सदस्यता, 3. सामान्य पेशा-प्रत्येक जाति का परम्परागत पेशा, 4. जाति पंचायत-पंचायत पायी जाती है।

इन्होंने उपरोक्त के अलावा अन्त्रविवाही समूह की अन्त:क्रियाओं और संस्तरण, परंपरागत श्रम-विभाजन को भी महत्व दिया है।7 रैयान (1953) ने भी इनका समर्थन करते हुए लिखा है-''जाति-प्रथा सामाजिक संरचना में संस्तरणात्मक जन्म प्रस्थिति समूह के रूप में कार्य करती है।''8 बाउगल ने भी प्रो. अटल के समान ही लिखा है-''विभिन्न जातियों के बीच जातिसंस्तरण के कारण ही विरोध की स्थिति उत्पन्न होती है।''9 डॉ सिंह ने जाति के सम्पूर्ण सिद्धान्तों को चार भागों में विभक्त किया है-1. सांस्कृतिक सार्वभौमिकता, 2. सांस्कृतिक विषिष्टता, 3. संरचनात्मक सार्वभौमिकता, 4. संरचनात्मक विषिष्टता।10

पाश्चात्य विद्वान् बार्थ (1960) व डेविस (1951) ने जातियों को व्यवसाय के आधार पर विशेष कृत बताया है।11 फर्नीवाल (1939), हट्टन (1946) एवं षेरिंग (1974) ने जाति के प्रकार्यात्मक पहलूओं का उल्लेख करते हुए लिखा है-

1. जाति जन्म से ही व्यक्ति को सामाजिक वातावरण प्रदान करती है।
2. जाति के द्वारा ही व्यक्ति को जीवन साथी मिलता है।
3. व्यक्ति के लिए टे[a]ड यूनियन जाति के आधार पर ही होता है।
4. जाति व्यक्ति के लिए स्वास्थ्य का भी बीमा करती है।
5. जाति के आधार पर ही व्यवसाय निष्चित होता है।
6. यह राजनैतिक पार्टी का भी स्थान ले लेती है।
7. रीति-रिवाजों के अनुसार समुदाय के खान-पान, षौच आदि का नियमन भी जाति ही देती है।
8. जन्म, उपनयन, विवाह और मष्त्यु के अवसरों पर अनुश्ठान का निर्धारण जाति के आधार पर ही किया जाता है।
9. जाति ही बहुत कुछ हैसियत निर्धारित करती है।
10. सदस्यों के चाल-चलन पर नियंत्रण रखना भी जाति का कार्य है।
11. संघटन और प्रचार के द्वारा जाति अपना नाम भी बदल सकती है।
12. जाति, खान-पान और विवाह के नियमों में परिवर्तन कर दूसरों की नजर में ऊपर उठ सकती है।
13. जाति धार्मिक मामलों में भी महत्वपूर्ण कार्य करती है।
14. जाति-व्यवस्था ने भारतीय समाज में एकता स्थापित करने का कार्य किया है।
15. यह राजनैतिक स्थिरता का माध्यम भी मानी जाती है।12

फणीष्वरनाथ रेणु हिन्दी साहित्य के महान कथाकार है। उनके कथा-साहित्य के अन्तर्गत मैला-आचंल, परती-परिकथा, दीर्घतपा, जूलुस, कितने चैराहे, पल्टु बाबू रोड, उपन्यास है तथा ठुमरी, आदिम रात्रि की महक, अग्निखोर, एक श्रावणी दोपहरी की धूप कहानी-संग्रह सम्मिलित है। प्रो. षिवदान सिंह चैहान ने उनकी रचना-प्रक्रिया के बारे में लिखा है-''रेणु उतनी ही प्रौढ़ और व्यापक विष्वबोध और रचनात्मक प्रतिभा का मूलधन लेकर साहित्य के क्षेत्र में उतरे, जितने गहरे और व्यापक विष्वबोध और प्रतिभा की उपलब्धि के लिए प्रेमचंद को तीस साल तक रचना प्रक्रिया की अनेक टेढ़ी-मेढ़ी और सकरी गलियों में भटकना पड़ा।''13 नलिन विमोचन षर्मा ने रेणु के प्रसिद्ध उपन्यास मैला आंचल के प्रकाषन के बारे में लिखा है-''मैला आंचल एक धमाके की तरह हिन्दी में प्रकट हुआ।''14 उन्होंने अपने इस उपन्यास में जाति और जेण्डर विशयों के बारे में स्वयं लिखा है-''मैंने इसमें एक पिछड़े गांव की जाति-व्यवस्था पर भी प्रकाष डाला है।''15 रेणु के कथा-साहित्य में जाति, जेण्डर व किसानी आदि के वर्णनों के बारे में परमानन्द श्रीवास्तव ने लिखा है-''भारतीय उपन्यास यूरोपीय अर्थ में मध्यवर्ग का महाकाव्य या मध्यवर्ग की महागाथा नहीं है बल्कि वह ठेठ भारतीय अर्थ में किसान चेतना का महाकाव्य या महागाथा है।''16 उनका कथा-साहित्य हिन्दी क्षेत्र में पनपती जाति चेतना की निर्मित और उससे होने वाली हानियों और लाभ को पूर्ण विष्लेशण के साथ प्रस्तुत करता है। इसमें जाति जन्य परेषानियों, अवमाननाओं, असमानताओं का भी चित्रण किया गया है। उनके साहित्य में जाति को लेकर अनेकों प्रष्नों को उभारा गया है। विषेशकर उनकी कहानियों एवं उपन्यासों में जाति के बारे में अत्यन्त प्रबल प्रष्नों को उठाया गया है। इन सभी रचनाओं में रेणु ने समाज में व्याप्त जाति-प्रथा पर प्रकाष डाला है। रेणु अपने कथा-साहित्य में निहित जाति-प्रष्नों, जेण्डर को सम्पूर्ण रूप से ऐतिहासिकता और लोकतांत्रिक ढांचे को स्पश्ट करते है। रेणु ने जाति के बारे में लिखा है-''जात-पात नहीं मानने वालों की भी जाति होती है। सिर्फ हिन्दू

कहने से ही पिण्ड नहीं छूट सकता। ब्राह्मण हैं? कौन ब्राह्मण? गोत्र क्या है? मूल कौन है? गाँव में तो बिना जाति के आपका पानी नहीं चल सकता?''17 उनकी कहानियों में भी जाति प्रष्न मिल जाते है 'रसप्रिया' कहानी में उन्होंने दूसरी जाति के बच्चे बेटा कहकर पुकारने पर दण्डित किये जाने की घटना का वर्णन किया है इसी प्रकार 'प्राणों में घुले हुए रंग' नामक कहानी में जेण्डर और जाति के दर्षन को उन्होंने प्रस्तुत किया है। कहानी का मुख्य पात्र डॉक्टर हैजे से मरणासन्न स्त्री को इंजेक्षन लगाने ही जा रहा था तब तक गांव के जमींदार साहब कुछ लोगों के साथ वहां आ गये और उन्होंने डॉक्टर के बारे में कहा-''तुमने तो हद कर दिया। छिः-छिः जरा षर्म भी तो हो! एक भद्र परिवार की संतान होकर इस नीच छोकड़ी पर मर रहे हो। तुम्हें अपनी इज्जत की परवाह न हो, लेकिन गांव वालों की इज्जत की भी फिक्र की होती! छिः-छिः।''18 डॉक्टर ''हाथ में सिरिंज लेकर खड़ा रहा उस दिन युवती ने परिस्थिति ताड़ ली। उसने मेरी ओर एक बार देखा, फिर जोर लगाकर उस अर्ध मृत युवक को उठाकर गधे पर बोझ दिया। उठाने के समय युवक ने मुंह बाकर पानी मांगा। असहाय युवती की आंखें बरस पड़ी।''19 रेणु जी पुनः लिखते है कि ''उस समय के समाज में जाति और जेण्डर को लेकर किस प्रकार की स्थिति थी-'छिः-छिः, वेहया! निर्लज्ज!! गांव-भर का सत्यानाष करेगा।''20 डॉक्टर ''हाथ में सिरिंज लेकर चुपचाप देखता रहा-गोधूमि की बेला, दूर-बहुत दूर उसकी जमात रंगीन धूल उड़ाती जा रही थी। गधे पर अपने प्रियतम को लादे। घाघरी के छोर से आंसू पोंछते हुए वह भी उधर ही जा रही थी।''21 रेणु ने इस कहानी में जाति और जेण्डर की निर्मिति के बारे में सारकारी रिर्पोट का कुछ अंष भी प्रस्तुत किया है-''मगहिया डोम, एक खाना बदोष कौम। यह जाति, औरत, बच्चों के साथ जमात बाधकर एक गांव से दूसरे गांव में डेरा डालती फिरती है। औरतें और बच्चे गांव में भीख मांगते है। जवान औरते बुरा पेषा भी करती है।''22 डॉ. प्रषान्त के माध्यम से उन्होंने जाति एवं जेण्डर की समस्या को प्रस्तुत करने का पूर्ण प्रयत्न किया है। डॉ प्रषांत एक ऐसे गांव में पहुंच जाता है जहां उसकी जाति के बारे में अजीब ढंग से, अनेक लोग जानकारी एकत्र करना चाहते है-''नाम पूछने के बाद ही लोग यहां पूछते हैं-जात?''23 लेकिन प्रषांत पढ़ा-लिखा होने के कारण अपनी जाति छिपाता नहीं है बल्कि वह स्पश्ट रूप से बताता है-''सच्ची बात यह है कि वह अपनी जाति के बारे में खुद नहीं जानता। यदि उसे जाति का पता होता हो षायद उसे बताने में झिझक नहीं होती। तब षायद ब्राह्मण कहने में वह गर्व का अनुभव करता।''24 इसी प्रकार रेणु ने सामाजिक संरचना के अन्तर्गत जाति और उपजाति का भी चित्रण अपनी रचनाओं में किया है। बालदेव के माध्यम से उन्होंने स्पश्ट किया-''बाभन-भोजन नहीं हुआ तो फिर भोज क्या। महंथ जी से कहना होगा बाभन हैं ही कितने, सब मिलाकर दस घर।''25 बालदेव का मानना है कि वे मांस-मछली नहीं खाते तभी वह सोचता है ''माँ भी दास थी। मांस मछली छूती भी नहीं थी।''26 इसके अलावा अन्य पात्र भी जाति और वर्ण भेद से प्रभावित प्रतीत होते है। हरगौरी सिंह और विष्वनाथ प्रसाद के प्रकरण में भी रेणु ने स्पश्ट किया हैμ''सुमरित दास सबो से कहता है, देखों-देखों, कायस्थ के जूठे पत्तल में राजपूत खा रहा है।''27 इसके अलावा डॉ. प्रषांत के यहां एक नौकर जिसका नाम प्यारू था वह दूसाध जाति का था उसके बारे में गांव वालों की जाति विशयक मानसिकता का वर्णन रेणु ने निम्न षब्दों में किया हैμ''ब्राह्मण टोली के लोग बालदेव जी से पूछते है, डॉगडर बाबू का नौकर तो दुसाध है और डॉगडर बाबू कौन जाति के है? दुसाध का बनाया हुआ खाते है।''28

इसी प्रकार उनकी एक रचना 'परती परिकथा' में भी जाति के प्रष्नों को उभारा गया हैμ''लुत्तो जो एक निम्न, 'खवास' जाति का है। वीरभद्दर सिंह के घर पर बैठा है। वीरभद्दर सिंह खुद उसे अपने घर पर ले गये थे, लेकिन तभी थप-थप दूसरे कमरे से ताली बजाकर अंदर बुलाया। वीरभद्दर बाबू की स्त्री नेμ'हलवा तो खिलाइयेगा, उसकी जूठी कटोरी कौन धोयेगा?

'चुप-चुप! धीरे-धीरे, लुत्तो बा वह सुन लेगा।'

'सुन लेगा तो क्या होगा?'

'आजादी देवी, देखों? समझो जरा। बहुत इंपौन्टे।'

'मुझे आजादी देवी मत कहिये।'

'छिः!'

'तो धोइयेगा आप उसकी झूठी कटोरी?'29

इस प्रकार स्पश्ट है कि फणीष्वरनाथ रेणु ने जाति, जेण्डर और वर्ण-भेद को सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक दष्टि से भी देखने का प्रयत्न किया है उन्होंने अपने उपन्यासों में जातीयता के प्रष्न, जातीय-अस्तित्व, जेण्डर आदि के चित्र उकेरे है। मैला आचंल में सिंघ जी अपने को उच्च जाति में पैदा होने के कारण गौरवान्वित महसूस करता है। इसी प्रकार 'परती परिकथा' में बालगोबिन नामक पात्र जाति जन्य पीड़ा और हीनता बोध के कारण स्वयं को परेषान महसूस पाता है और स्वयं से पूछता हैμ''वह क्यों चमार होकर जन्मा इस मिरतूभूवन में?''30 फणीष्वरनाथ रेणु ने 'जाति प्रष्न', 'जेण्डर' के तमाम नमूनों को वर्ण-जाति-व्यवस्था के आईने से देखा है और उससे होने वाली हानियों पर भी प्रकाष डाला है। परती परिकथा उपन्यास में जाति और जेण्डर के सन्दर्भ को मलारी नामक पात्र के माध्यम से व्यक्त किया है। मलारी की मां के मस्तिश्क में जाति को नीयति की देन मानने वाली मानसिकता के बारे में उन्होंने लिखा हैμ''महीचन अपनी बेटी पर जन्म के बाद से ही दांत कटकटाता है। साली इतनी गोरी कैसे हो गयी। सौर-घर में ही घूसकर उसने अपनी स्त्री को लात से मारते हुए कहा थाμअब बोलो? यह गोरी-लारी छौड़ी मलारी कहां से आई?''31 मलारी की मां ने भी देखा और उसे आष्चर्य हुआμ''देखा है बचपन से ही मलारी की बुद्धि बबुआनों की बेटी जैसी! पढ़ने-लिखने का ऐसा षौक कि भाग कर कब चली गई एक पढ़ने, किसी को मालूम नहीं। आखिर, जहां की थी वहीं चली गई।''26 इस प्रकार गोरा रंग और बुद्धि दोनों को उच्च जाति से जोड़कर देखने का नजरिया जो उस समय के समाज में व्याप्त था उसको भी फणीरवरनाथ रेणु ने प्रस्तुत किया। उनका एक पात्र भिम्मल मामा कहता हैμ''खवास स्वरूप होते है। सवर्ण के सत्संग, संस्कार तथा अन्तर्मिलन के फलस्वरूप।''32 इसी प्रकार मलारी की मां और बाप की तरह लुत्तों ने भी जाति के बारे में अपनी एक मानसिकता

बना रखी थी जैसा कि स्पश्ट हैμ''मन ही मन मान लिया, बड़ी जाति वालों का मैण्ड सचमुच में थोड़ा तेज होता है।''33 इसी प्रकार मैंला आंचल में खिलावन सिंह की मानसिकता जो बालदेव के बारे में उससे भी जाति प्रष्न स्पश्ट होता हैμ''सुराजी होने से क्या हुआ, जाति सुभाव नहीं छूटते।''34

फणीष्वनाथ रेणु के उपन्यासों में लगभग तत्कालिन समाज विभिन्न जातियों में बटा हुआ प्रतीत होता है और यह प्रक्रिया निरन्तर और भी प्रबल होती जा रही है। इसके अलावा फणीष्वरनाथ रेणु ने मैंला आंचल में बोधा नामक पात्र को भी उच्च जाति के होने के कारण स्पश्ट किया हैμ''लेकिन भगवान् ने षरीर दिया है, उच्च जाति में जन्म दिया है। इसी के बल पर बहुत बाबू-बबूआन, हाकिम-हुक्काम और अमला-फैला से हेल-मेल हुआ। जान-पहचान हुई।''35 परती परिकथा में सुबंस लाल की भाभी स्पश्ट करती हैμअश्टवर्शिया बेटी षान्ति भी उठकर आई और हंसकर बोलीμहां-हां। इसी में चमाईन मास्टरनी का फोटो है। स्कूल में।''36

फणीष्वरनाथ रेणु ग्रामीण जीवन के कथाकार है उनके कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन में व्याप्त जाति भेद, जाति चेतना और जाति संस्कार उभर कर आये है। मैंला आचंल उपन्यास में जब पूरे गांव को भोजन कराने की घोशणा की जाति है तो जाति प्रष्न को अत्यन्त व्यापक रूप से रेणु ने उकेरा हैμ''बाभनों ने तो साफ इन्कार कर दिया है। यदि बाभनों के लिए अलग प्रबंध न हुआ तो सरब संगठन में नहीं खायेंगे।''37 इसी प्रकार उनके भोजन के बारे में यह सूचना मिलते ही राजपूत भी कहने लगेμ''हम लोग भी नहीं खायेंगे। हिबरन सिंह बेटा आकर कहा गया है, ग्वाला लोगों के साथ एक पंगत में नहीं खायेंगे। हम लोगों के गांव का आटा, घी, चीनी अलग दे दिया जाये, हम लोग अलग बनवा लेंगे।''38 इसी प्रकार परती परिकथा में भी सिबेन्द्र मिश्र ने श्राद्ध तिथि पर दिये जाने वाले भोजन के अवसर पर कहाμ''ब्राह्मण, भूमिहार और राजपूतों ने अपने-अपने टोले के भोज के लिए नकद रुपया ले लिया।''39 लेकिन निम्न जातियों के बारे मेंμ''सोलकन्ह लोगों ने हवेली में होने वाले भोज में ही जाकर खाया, तहसीलदार साहब के गुहाल में हलवाई लोग सुबह से ही पूड़ी जलेबी बना रहे हैं। पूड़ी बनाकर ढ़ेर लगा दिया है। गांव के बच्चे सुबह से ही जमा है। राजपूत और कायस्थों के बच्चे दूसरे टोले के बच्चों को उधर नहीं जाने देते हैμ''भागो, छू जायेगा''।''40

इस प्रकार फणीष्वरनाथ रेणु के कथा-साहित्य में जेण्डर, जाति-व्यवस्था की जड़ों की कलई खुलती हुई दिखाई देती है। उन्होंने जाति की निर्मिति, जेण्डर तथा उससे जुड़े अनेकों सकारात्मक और नकारात्मक पक्षों पर प्रकाष डाला है।।

सन्दर्भ ग्रंथ

उपन्यास:

मैला-आंचल, फणीष्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाषन, 1954
परती-परिकथा, फणीष्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाषन, 1957
दीर्घपता, फणीष्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाषन, 1964
जूलुस, फणीष्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाषन, 1965
कितने चैराहे, फणीष्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाषन, 1966
पल्टू-बाबू रोड, फणीष्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाषन, 1979

कहानियां:

ठुमरी, फणीष्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाषन, 1959
आदिम रात्रि की महक, फणीष्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाषन, 1966
अग्निखोर, फणीष्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाषन, 1973
एक श्रावणी दोपहरी की घूप, फणीष्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाषन, 1984

अंग्रेजी ग्रंथ

Caste Class and power, Ander, Oxford University Press, 1966
Caste of mind, Nicholas, B, Driks, Prisceton University Press, 1950
Caste and race in india, G.S. Ghurye, Popular Prakashan, Bombai, 1986
Essays on the caste system by Celestin Bougle, D.F. Pocock, Cambridge, 1971